सामाजिक अध्ययन कक्षा VI

Government of Telangana

Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation

When abused in or out of school.

To save the children from dangers and problems.

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY

24 HOUR NATIONAL HELPLINE

When the children are denied school and compelled to work.

When the family members or relatives misbehave.

1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा हैदराबाद

IN ANY EMERGENCY
DIAL 100
TELANGANA POLICE
www.tspolice.gov.in
@ Telangana State Police

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरित

सामाजिक अध्ययन कक्षा VI

सामाजिक अध्ययन

कक्षा VI

Free

SOCIAL STUDIES (Hindi Medium)
CLASS VI

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित
हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरित

मौलिक कर्तव्य

मौलिक कर्तव्य..... ये भारत के हर नागरिक के कर्तव्य होंगे–

(अ) संविधान के प्रति दृढ़ होंगे तथा इसके आदर्शों और संगठनों का आदर करेंगे, जैसे राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गीन।

(आ) उन पवित्र आदर्शों का पोषण और अनुकरण करेंगे, जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरणा प्रदान की।

(इ) भारत की संप्रभुता, एकता और पवित्रता का समर्थन करेंगे और रक्षा करेंगे।

(ई) देश की रक्षा करेंगे और आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय सेवा प्रदान करेंगे।

(उ) धार्मिक, भाषायी और क्षेत्रीय आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय सेवा प्रदान करेंगे। भारत के लोगों में एकता, शांति तथा बंधुत्व की भावना का विकास करेंगे, नारी के प्रतिष्ठा में बाधक प्रथाओं का त्याग करेंगे।

(ऊ) हमारी मिलीजुली संस्कृति की बहुमूल्य विरासत का आदर करेंगे और संरक्षण करेंगे।

(ए) प्राकृतिक पर्यावरण के साथ वनों, झीलों, नदियों और जंगली जीवों की रक्षा करेंगे और सुधार करेंगे और सजीव जीवों के लिए करूणा रखेंगे।

(ऐ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता और अन्वेषण की भावना का विकास करेंगे।

(ओ) सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करेंगे और हिंसा का परित्याग करने की शपथ लेंगे।

(औ) व्यक्तिगत और सामुदायिक क्रियाकलापों के हर क्षेत्र में श्रेष्ठता के लिए प्रयत्न करेंगे, जिससे कि राष्ट्र प्रयास और उपलब्धि के उच्चतर स्तरों तक निरंतर बढ़ सकें।

(अं) जो माता–पिता या अभिभावक है, वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करेंगे, उस स्थिति में जब रक्षित व्यक्ति छः और चौदह वर्ष की आयु के बीच हो।

- भारत का संविधान

भाग IV अ (धारा 51 अ)

Right of Children to Free and Compulsory Education (RTE) Act, 2009

The RTE Act is meant for providing free and Compulsory Education to all Children in the age group of 6 – 14 years and came into force from 1st April 2010.

Important provisions of RTE Act

- Ensure availability of schools within the reach of the children.
- Improve School infrastructure facilities.
- Enroll children in the class appropriate to his / her age.
- Children have a right to receive special training in order to be at par with other children.
- Providing appropriate facilities for the education of children with special needs on par with other children.
- No child shall be liable to pay any kind of fee or charges or expenses which may prevent him or her from pursuing and completing the elementary education. No test for admitting the children in schools.
- No removal of name and repetition of the child in the same class.
- No child admitted in a school shall be held back in any class or expel from school till the completion of elementary education.
- No child shall be subjected to physical punishment or mental harassment.
- Admission shall not be denied or delayed on the ground that the transfer and other certificates have not been provided on time.
- Eligible candidates alone shall be appointed as teachers.
- The teaching learning process and evaluation procedures shall promote achievement of appropriate competencies.
- No board examinations shall be conducted to the children till the completion of elementary education.
- Children can continue in the schools even after 14 years for the completion of elementary education.
- No discrimination and related practices towards children belonging to backward and marginalized communities.
- The curriculum and evaluation procedures must be in conformity with the values enshrined in the constitution and make the child free of fear and anxiety and help the child to express views freely.

SCERT TELANGANA

सामाजिक अध्ययन
कक्षा VI

संपादक

श्री सी.एन. सुब्रहमण्यम, एकलव्य, एम.पी.

प्रो. आई. लक्ष्मी, इतिहास विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. एम कोदंडराम, राजनीतिशास्त्र विभाग, पी.जी. कालेज, (उ.वि.वि.) सिकिंद्राबाद

प्रो. के. विजयबाबू, इतिहास विभाग, काकतीय विश्वविद्यालय, वंरगल

डॉ. एम.वी श्रीनिवासन, सहायक प्रो.
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. एम.वी.एस.वी. प्रसाद, सहायक प्रो.
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. सी. दयाकर रेड्डी, सहायक प्रो.
उस्मानिया कॉलेज फॉर वुमेन, कोठी, हैदराबाद

श्री के. सुरेश मंची पुस्तकम्, हैदराबाद

प्रो. जी. ओंकारनाथ, अर्थशास्त्र विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. एस. पद्मजा, भूगोल विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो.ए.सत्यनारायण (सेवानिवृत्त), इतिहास विभाग,
उस्मानिया विश्व विद्यालय, हैदराबाद

प्रो.के.कैलाश, राजनीतिशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्व विद्यालय, हैदराबाद

डॉ. के. नारायण रेड्डी सहायक प्रो. भूगोल विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

श्री अरविंद सरदाना, निदेशक, एकल्वय, भोपाल, म.प्र.

श्री राममूर्ति शर्मा
शिक्षा विभाग, पंजाब सरकार

श्री एलेक्स. एम् जार्ज
एकलव्य, एम.पी.

सलाहकार लिंग संवेदनशीलता
श्रीमती चारु सिन्हा, IPS
निदेशक, A.C.B तेलंगाणा, हैदराबाद

पाठ्य पुस्तक विकास समिति

श्रीमति बी.शेषुकुमारी निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा
हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर, निदेशक
सरकारी पाठ्य पुस्तक प्रिंटिंग प्रेस
तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. एन. उपेन्दर रेड्डी
प्रोफेसर और अध्यक्ष पाठ्यक्रम और पाठ्य
पुस्तक विभाग
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा., हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

कानून का आदर करें
अधिकार प्राप्त करें

शिक्षा से बढ़ें
विनम्रता का व्यवहार करें

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana, Hyderabad.

First Published 2012

New Impressions 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana.
We have used some photographs which are under creative common licence. They are acknowledge at the end of the book.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho Title Page
200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by Government of Telangana 2020-21

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana.

SCERT TELANGANA

लेखकगण

डॉ. के. लक्ष्मारेड्डी, वरिष्ठ लेक्चरर, डी.आई.ई.टी., करीमनगर
श्री एम. नरसिम्हा रेड्डी, जी.एच.एम.जेड., पी.एच.एस., पेद्दाजगमपल्ली, वाई.एस.आर. कड़प्पा
श्री के. लक्ष्मीनारायण, लेक्चरर, डी.ई.आई.टी., कृष्णा
श्री के. सुब्रहमण्यम्, लेक्चरर, डी.ई.आई.टी., कर्नूल
श्री एम.पापय्या, लेक्चर एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा, हैदाराबाद
श्रीमती टी.एस. मल्लेश्वरी, लेक्चरर, एस.आई.ई.टी., हैदराबाद
श्री कोरीवी श्रीनिवास राव, एस.ए., एम.पी.यू.पी. विद्यालय, पी.आर. पल्ली, श्रीकाकुलम
श्री यू. आनंद कुमार, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., पथापलवंचा, खम्मम
श्री बी. श्रीनिवासु, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., सावेल, निजामाबाद
री शेख रहमतुल्ला, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., भाकरापेटा, वाई.एस.आर. कड़प्पा
श्री सी.एच. राधाकृष्णा, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., वेंकटापुरम, श्रीकाकुलम
श्रीमती बी. सरला, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., इंदुकुरूपेट, पी.एस.आर. नेल्लूर
श्री बी. शंकर राव, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., देवुपल्ली, विजयानगरम
श्री मोहन रेड्डी, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., येनमनगंडला, महबूबनगर
श्री आयाचितुल लक्ष्मणराव, एस.ए., जी.एच.एस., धगंरवाडी, करीमनगर
डॉ. आर. गणपति, लादेला, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., आत्मकुर, वरंगल
श्री गड्डमीदी रतांगपाणि रेड्डी, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., पोलकमपल्ली, मूसापेट, महबूबनगर
श्री वंगूरि गंगीरेड्डी, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., कोनदुर्ग, महबूबनगर
डॉ. चक्किनाल श्रीनिवास, जी.एच.एम., जी.एच.एस., दुर्गम्मगड्डा, करीमनगर
श्री एन. जगन्नाथ, एस.ए., जी.एच.एस., कुलसुमपुरा, हैदराबाद

समन्वयक

श्री जे. राघवुलु, प्रो. एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एम. पापय्या, लेक्चरर, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एस. विनायक, सह-समन्वय, सी एंड टी विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एम. नरसिम्हा रेड्डी, जी.एच्.एम., जेड.पी.एच.एस., पेद्दाजगमपल्ली, वाई.एस.आर. कड़प्पा
श्री कोरीवी श्रीनिवास राव, एस.ए.एम.पी.यू.पी. विद्यालय, पी.आर. पल्ली, श्रीकाकुलम

हिन्दी अनुवाद समन्वयक

डॉ. पी. शारदा, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

हिन्दी अनुवादक

श्री सय्यद मतीन अहमद, राज्य हिंदी संसाधक
डॉ. विनिता सिन्हा, हिंदी महाविद्यालय, हैदराबाद
डॉ. अर्चना झा, हिंदी महाविद्यालय, हैदराबाद
जी. किरण, मलकपेट, हैदराबाद
शोभा महेश्वरी, गुजराती हाईस्कूल, हैदराबाद
अनिता सामर्थ, हैदराबाद
श्री सुरेश कुमार मिश्रा, राज्य संसाधक
कविता, हैदराबाद
एन. हेमलता, रंगारेड्डी
अनिल शर्मा, हैदराबाद
ए.वी. रमणा, हैदराबाद

चित्रकार

श्री कुरेला श्रीनिवास, एस.ए. पोचमपल्ली, नलगोंडा
श्री बी. किशोर कुमार, एस.जी.टी.एम.पी.यू.पी.एस्. अलवाला, अनुमुला, नलगोंडा
श्री पी. आंजनेयलु, जियोमैपर, सीईएसएस-डीसीएस, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

छात्रों को पत्र

'पूरे दिन खेत और घर में काम के पश्चात् जब बहुत थककर मेरी माँ नीचे लेट जाती है, तो मैं उनके पास बैठ जाता हूँ और आश्चर्य करता हूँ कि नारी का जीवन इतना कठिन क्यों होता है? यदि मैं घर के बाहर जाऊँगा, तो मुझे कई अलग-अलग तरह के लोग मिलेंगे, लोग जो भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं और जो भिन्न-भिन्न रिवाजों का पालन करते हैं, मैं सोचता हूँ कि वे कौन हैं और क्यों इस तरह के अलग-अलग प्रकार के लोग हैं। मैं समाचार पत्र पढ़ता हूँ और मुझे पता चला कि अधिक प्रयासों से हमारा भोजन उत्पन्न करने वाले हमारे किसान निराशा से पीड़ित हैं। मुझे आश्चर्य है कि किसने उन्हें निराश और आशाहीन बना दिया। शहर की गलियों से गुजरते हुए मैं विशाल और सुंदर भवन, सड़कें, मंदिर, मस्जिद और गिरिजाघर देखता हूँ। मैं आश्चर्यचकित होता हूँ कि किसने इन्हें बनाया और किस लागत पर बनाया हैं? मैं झोपड़पट्टी भी देखता हूँ कि जहाँ अति भाग्यहीन परिस्थियों में हजारों लोग रहते हैं और मैं आश्चर्य करता हूँ कि उनके पास रहने के लिए जगह और इतने सुंदर भवन क्यों नहीं हैं?

मेरे बुजुर्गों ने भी इनमें से कुछ समस्याओं के बारे में चर्चा की और सही लोगों को मत देने और चुनने के बारे में बातचीत की और मैं विस्मित हूँ कि किसने हम पर शासन किया और कैसे किया? मेरे दादा-दादी पुराने जमाने की कहानियाँ सुनाते हैं, जब वहां राजा और रानी थे और उस समय की भी जब भगवान और संत लोगों के बीच विचरते थे। मैं आश्चर्य करता हूँ कि क्या ये चीजें वास्तव में संभव हैं?

मेरे पास कई प्रश्न हैं, जिनके लिए मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि क्या किसी के पास उनके उत्तर है? कदाचित किसी भी व्यक्ति को पूरे उत्तर नहीं पता है और कदाचित किसी भी व्यक्ति को उनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर पता नहीं होंगे? संयोग से मेरे लिए उन्हें जानना आवश्यक है। मैं कैसे पता कर सकता हूँ। कौन मेरी सहायता करेगा?'

प्रिय मित्रों,

जो प्रश्न आपके मस्तिष्क में उत्पन्न हो रहे हैं, वे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, जिनके उत्तर सभी के लिए जानना आवश्यक है। इनके उत्तर आसानी से नहीं दिये जा सकते, क्योंकि उनमें से अधिकांश के निश्चित उत्तर नहीं हैं। सही अर्थों में कई प्रश्नों के उत्तर अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग दिये जा सकते हैं। शायद समस्याओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् आपके भी अपने स्वयं के उत्तर देने होंगे। प्रश्न पूछने और उनके उत्तर देने के लिए विभिन्न प्रणालियों के क्रियान्वयन द्वारा सामाजिक विज्ञान जिस समाज में हम रहते हैं, उसे समझने का प्रयास करता है। यह हमें यह भी समझने में मदद करता है कि क्यों अलग-अलग लोग प्रश्नों के अलग-अलग उत्तर देते हैं- उदाहरण के लिए यदि आप किसी से पूछेंगे, स्कूल की तुलना में कॉलेज में लड़कियाँ क्यों कम हैं, आपको अलग-अलग लोगों से अलग-अलग उत्तर मिलेंगे। यदि आप पूछेंगे कि कॉलोनियों और स्लम् साफ क्यों नहीं किये जाते, आपके फिर से अलग-अलग उत्तर मिलेंगे। लोग इन प्रश्नों के अलग-अलग उत्तर क्यों देते हैं? सामाजिक विज्ञान इस समस्या को भी समझने का प्रयास करता है।

सामाजिक विज्ञान समस्या के भिन्न-भिन्न उत्तरों का सिर्फ संचय नहीं करता है। वे उसके अध्ययन के लिए कठोर प्रणाली लाने का प्रयास करता है। वह समस्याओं को समझने का प्रयास करता है कि वह कैसे विकसित हुई, कैसे और क्यों इनमें परिवर्तन आया, वे ये देखने का प्रयास करते हैं कि संपूर्ण पृथ्वी पर ये एक जैसी हैं या विश्व के विभिन्न स्थानों पर ये बदलती हैं और वह इनके बारे में विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करता है। क्या अतीत में भी कॉलेजों में लड़कियों की संख्या कम थी? क्या संपूर्ण विश्व के कॉलेजों में लड़कियों की संख्या कम थी? क्यों? लड़कियों को कॉलेज जाने से कौन रोकता था? वे माता-पिता क्या कहते हैं, जो अपनी लड़कियों को कॉलेज नहीं भेजते हैं? वे माता-पिता क्या कहते हैं, जो लड़कियों को कॉलेज भेजते हैं? लड़कियाँ क्या कहती हैं? अध्यापक क्या कहते हैं? सामाजिक वैज्ञानिक मुख्य प्रश्नों के उत्तर देने के पहले इन सभी को मिलाते हैं। किंतु कोई भी सामाजिक वैज्ञानिक आपको अंतिम और निश्चित उत्तर नहीं दे सकता और यह आपको तय करना है कि कार्य करने के लिए कौनसा उत्तर अधिक निश्चित और उपयोगी है।

-संपादक

SCERT TELANGANA

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक आपके सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का भाग है या अपने आस-पास के समाज के अध्ययन के लिए आप जो विभिन्न कार्य कर रहे हैं, उनका एक भाग है। फिर भी याद रखिए कि यह उस पाठ्यक्रम का एक छोटा भाग है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम अपेक्षा करता है कि आप जो जानते हैं, उसे कक्षा में बाँटिये और उसका विश्लेषण कीजिए। इन सबसे ऊपर यह अपेक्षा करता है कि आप प्रश्न पूछिए- सोचिए कि वस्तुएँ जैसी हैं, वैसी क्यों है? यह, यह भी अपेक्षा करता है कि आप और आपके मित्र कक्षा से बाहर बाजार, पंचायत या म्यूनिसिपालिटी ऑफिस, गाँव के खेतों, मंदिरों और मस्जिदों तथा म्यूजियम जाएँ और विभिन्न बातें पता कीजिए। आपको कई लोगों जैसे किसान, दुकानदार, उपदेशक, ऑफिसरए आदि लोगों से मिलिए और चर्चा कीजिए।

यह पुस्तक आपके सामने कई तरह की समस्याएँ रखेगी और आपको उनका अध्ययन करके अपने स्वयं के निश्चय पर पहुँचने के लिए तैयार करेगी। इस पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके पास उत्तर नहीं है। सही अर्थों में यह पुस्तक वास्तव में पूर्ण नहीं है। यह तभी पूर्ण हो सकती है, जब आप और आपके मित्र तथा अध्यापक अपने स्वयं के प्रश्न और अनुभव प्रस्तुत करेंगे और कक्षा में हर बारीक विषय पर चर्चा करेंगे। आप इस पुस्तक की कई बातों से असहमत हो सकते हैं- उसे कहने में घबराइए नहीं, केवल अपने कारण बताइए। आपके मित्र आपसे असहमत हो सकते हैं, लेकिन समझने का प्रयत्न कीजिए कि उनके विचार भिन्न क्यों हैं। अंत में अपने स्वयं के उत्तर पर आइए। आप अपने उत्तर से निश्चिंत नहीं होंगे- आप अपने मन को निश्चिंत करने के लिए और अधिक जानना चाहते होंगे। ऐसी स्थिति में अपने प्रश्नों की सूची बनाइए और उन्हें पता लगाने में सहायता करने के लिए अपने मित्रों, अध्यापकों व बड़ों से विनती कीजिए।

यह पुस्तक सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने में सहायक होगी जैसे- भूमि और लोगों की विविधता के बारे में, लोग रोजी-रोटी कैसे पाते हैं, इस के बारे में, लोगों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार होती है और वे उसकी देख-रेख कैसे करते हैं। किस तरह हमारे समाज के सभी लोग एक समान नहीं है और कैसे लोगों में समानता लाने का प्रयत्न करना चाहिए, किस प्रकार लोग विभिन्न भगवानों की पूजा विभिन्न पद्धतियों से करते हैं और अंतिम रूप से वे एक दूसरे से कैसे संपर्क रखते हैं तथा एक संस्कृति बनाते है, जो उनके द्वारा बाँटी जाती है।

पहाड़ों, मैदानों, नदियों और समूहों इनमें से कुछ विषयों को समझने के लिए आपको पृथ्वी के बारे में अध्ययन करना पड़ सकता है, दूसरों को समझने के लिए आपको यह जानना पड़ सकता है कि सैकड़ों या फिर हजारों वर्षों पहले क्या हुआ था। किंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आपको बाहर जाकर अपने आस-पास के विभिन्न प्रकार के लोगों से बातचीत करनी पड़ सकती है।

जब आप कक्षा में यह पुस्तक पढ़ेंगे, आपके सामने कई प्रश्न आएंगे- रुकिए और उन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए। पाठ को शीघ्र समाप्त करना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि प्रश्नों पर चर्चा और क्रियाकलाप भी करना है।

कई पाठ ऐसी परियोजनाएँ सुझाते हैं, जिन्हें करने में कुछ दिन लग सकते हैं। ये परियोजनाएँ आपको सामाजिक विज्ञान संबंधी पूछताछ विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण के कौशलों के विकास में योग्य बनाती हैं- पाठों में क्या लिखा है उसे याद रखने से अधिक यह महत्वपूर्ण हैं।

कृपया याद रखिए कि पाठ में क्या दिया गया है, आपको उसे याद करना नहीं है, बल्कि उसके बारे में सोचिए और उसके बारे में अपनी स्वयं की राय बनाइए।

- अभ्यास और मूल्यांकन के लिए हम पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त विषय वस्तु से संबंधित मानचित्र, तालिकाओं और आरेखों का उपयोग कर सकते हैं।
- चर्चाइएँ, साक्षात्कार का आयोजन वाद-विवाद और परियोजनाएँ पाठ के मध्य में या सीखने की क्षमता को सुधारें के बाद दी गयी हैं। इनका उद्देश्य छात्रों में सामाजिक चेतना, संवेदात्मक और सकारात्मक अभिरुचि का विकास है। इसीलिए उन्हें अवश्य करवाना चाहिए।

निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना, हैदराबाद

आभार प्रदर्शन

हम उन सभी को धन्यवाद देना चाहेंगे, जिन्होंने इस पाठ्य पुस्तक निर्माण में अपना योगदान देकर इस पुस्तक को अधिक गुणशाली बनाया। हम धन्यवाद करते हैं डॉ. के.एन. आनन्दन भाषाज्ञाता केरल, डॉ. पी.दक्षिणा मूर्ति, सेवानिवृत उपनिर्देशक, तेलुगु अकादमी, श्री ए.आर.के. मूर्ति, सेवा निवृत उपनिर्देशक तेलुगु अकादमी, दीपा श्रीनिवासन, कार्तिक विश्वनाथ, जिन्होंने हमारे कार्य को सफल बनाया। योजनाबद्ध कार्यकर्ता व चित्रकारों को हमारा धन्यवाद। तेलंगाना सरकार के शिल्पकला संग्रहालय विभाग को भी धन्यवाद। पुस्तक में प्रयुक्त कुछ चित्रों को इन्टरनेट स्त्रोत द्वारा प्राप्त किया गया है। ये सभी चित्र 28 फरवरी, 2012 से पहले लिये गये हैं।

हमें अनेकों शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा अन्यों से जो प्रतिपुष्टियाँ प्राप्त हुई हैं उससे हमें पुस्तकों के अद्यतन और पुनरावृत्ति में बहुत सहायता मिली है। उनकी इन प्रतिपुष्टियों के लिए हम उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। विशेषकर, हम भारतीय इतिहास जागरुकता एवं अनुसंधान (IHAR), हॉस्टन, यू.एस.ए. के विशेष आभारी हैं जिन्होंने हमारी पाठ्यपुस्तकों की विस्तृत समीक्षा की है जिसके फलस्वरूप पाठ्यपुस्तकों में अनेक सुधार किये गये।

SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गीत

- रविंद्रनाथ टैगोर

जन - गण - मन - अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य-विधाात ।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा
द्राविड़, उत्कल बंग ।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा ।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा ।
जन - गण - मंगलदायक जय हे ।
भारत - भाग्य - विधाता ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय, जय, जय, जय हे !!

प्रतिज्ञा

- पैडिमर्रि वेकंट सुब्बाराव

"भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

मैं अपने देश से प्रेम करता हूं और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है।

मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूंगा।

मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा गुरुजनों का आदर करूंगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूंगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा।

मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूं।

उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।"

SCERT TELANGANA

अनुक्रम

क्र.सं.		पृष्ठ	महीना
	I. पृथ्वी पर विविधता		
1.	मानचित्र बनाना और पढ़ना	1-8	जून
2.	भूमंडल (ग्लोब) पृथ्वी का नक्शा	9-14	जून
3.	**भू-रचना** (भाग–अ)	15-18	जुलाई
	पेनमकुरु कृष्णा डेल्टा का एक गाँव (भाग–ब)	19-26	जुलाई
4.	**डोकूर - पठार पर एक गाँव**	27-35	जुलाई
5.	**पेनुगोल - पहाड़ियों में बसा गाँव**	36-43	जुलाई
	II. उत्पादन, विनिमय और जीवनशैली		
6.	भोजन **एकत्रित** करने से लेकर भोजन **उत्पादन** करने तक – आदि मानव	44-56	अगस्त
7.	हमारे समय में खेती/कृषि	57-64	अगस्त
8.	कृषि उत्पादों में व्यापार (भाग–अ)	65-72	अगस्त
	कृषि उत्पादों में व्यापार (भाग–ब)	73-79	अगस्त
	III. राजनैतिक व्यवस्था और सरकारी तंत्र		
9.	जनजातियों में सामुदायिक निर्णय	80-84	सितंबर
10.	साम्राज्यों और गणराज्यों की आवश्यकता	85-92	सितंबर
11.	पहला साम्राज्य	93-102	सितंबर
12.	प्रजातांत्रिक सरकार	103-111	**अक्तूंबर**
13.	ग्राम पंचायत	112-119	नवंबर
14.	नगरों में स्थानीय स्वशासन सरकार	120-126	नवंबर
	IV. सामाजिक संस्थाएं और विविधताएं		
15.	हमारे समाज में विविधता	127-134	नवंबर
16.	लिंग में समानता की ओर	135-142	दिसंबर
	V. धर्म और समाज		
17.	पूर्वकालीन धर्म एवं समाज	143-153	दिसंबर
18.	ईश्वर के प्रति भक्ति एवं प्रेम	154-161	जनवरी
	VI. संस्कृति और संचार		
19.	भाषा, रचनाएँ एवं महान ग्रंथ	162-168	जनवरी
20.	शिल्पकला और भवन	169-180	फरवरी
21.	तेलंगाणा में हरियाली	181-184	फरवरी
	पुनरावृत्ति और वार्षिक परीक्षाएँ		**मार्च**

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरण 2020-21

भारत का संविधान अभिमत

हम समस्त भारतवासी, शपथ लेकर निर्णय करते हैं कि हमने अपने लिए एक सर्व प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की संवैधानिक रचना कर ली है तथा समस्त नागरिकों के हित में समान रूप से यही स्वीकार्य है।

न्याय : सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक

स्वतंत्रताः विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, श्रद्धा तथा कार्याचरण में।

समानताः पद तथा अवसरों की तथा इन सभी में इसका विकास।

परस्पर सद्भावः प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सद्भाव के साथ-साथ राष्ट्र की एकता एवं संगठन की सुरक्षा को निश्चित करते हैं।

आज 26 नवंबर 1949 को हम घोषणा करते हैं कि हमने इस संविधान को स्वीकार कर लिया है, इसी पर कार्याचरण करेंगे तथा यही हम पर लागू होगा।

SCERT TELANGANA

Subs. by the constitution [Forty-second Amendment] Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)

Subs. by the constitution [Forty-second Amendment] Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)